

परमवीर

परमवीर

[परमवीर एक प्रसन्न कैदार भैरवनाथि के प्रति प्रदत्तलि]

नारायण लक्ष्मी माटा



प्रकाशक

कल्याणनगर पुस्तक मन्दिर
राधानाथ बोधपुर

हिन्दी अनुवादकर्ता
सोभाम्यसिंह दीपावा

संस्कृत-संस्कृत के गुणधर्म
प्रथम संस्करण अक्टूबर, १९६३
मुद्रण अन्नाई स्वामी

मुद्रण
हरिद्वार पत्रिका
रामना टैम
अन्नाई

समर्पण

भारतीय सेना के उन वीर सिपाहियों
को
जिनको हमें देश की सुरक्षा
के लिए
सबसे बड़ा जीवन बलिदान कर दिया ।

—लेखक

बाभार प्रदर्शन

इस पुस्तक में प्रकाशित एक ही चित्र को
प्रायः ११० मीटर लंबाई की बन्धी
की सुव्यवस्था के सिद्धांत से बना ही
एक ही प्रदर्शन ।

संभव

पहली बात (मुद्रिका)

काव्य

अतिरिक्त

- १ मेखर खेतानासिंह का अन्तिम पत्र
- २ प्रधान मन्त्री का लोक सभा में वक्तव्य
- ३ सैनिक अधिकारियों के पत्र
- ४ अतिरिक्त मंत्री, मुख्य मंत्री आदि के वक्तव्य

ग्रामार प्रदर्शन

इस पुस्तक में प्रकाशित पत्र एवं चित्र छापी
समय श्री स्व० मैजर खैरानन्दजी के सहयोग
श्री मूलभूतजी के सौजन्य से प्राप्त हुई
एकदम कृतज्ञ ।

काम :

पहली बात (मुनिका)

काम्य

परिचित

- १ मैजर सेतालसिंह का अन्तिम पत्र
- २ प्रधान मन्त्री का लोक सभा में वक्तव्य
- ३ सैनिक अधिकारियों के पत्र
- ४ प्रतिरक्षा मन्त्री, मुख्य मन्त्री आदि के वक्तव्य

पहली बात

सर्दी का मौसम सध्या के समय में धूमता घामता एक पान की बुझान पर मीड़ देस कर बक गया। वहाँ लड़े सभी लोग बड़े ध्यान से बबरें सुन रहे थे। चीतियों के बबर आक्रमण के प्रति रोप की भावना उनके चेहरों पर स्पष्ट थी। एकाएक रेडियो की तरफ मैंने गंभीरता से ध्यान दिया तो सुनने में आया "चीनी आक्रमणकारियों ने लद्दाख क्षेत्र के बुझल हवाई पट्टे के निकट बड़ा भारी आक्रमण कर दिया है। भारतीय सेना की एक पूरी कम्पनी ने बहादुरी से उनका सामना किया और सैकड़ों आक्रान्ता चीतियों को मीठ के जाट उतार दिया। उन्होंने चीतियों के किल्ले ही हमले विफल कर दिये और घन्ट में सना काम घाई। उनका सेनानायक (कमाण्डर) भी लड़ते-लड़ते बुरी तरह घायल हो गया। पूरी सेना में घायल कमाण्डर और दो सैनिक बचे। तब दोनों सैनिकों ने जसे जठा कर सुरक्षित स्थान पर ले जाने का विचार व्यक्त किया। दुश्मनों की मोलियाँ अभी तक बरस रही थी ऐसी स्थिति में कमाण्डर ने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि वे जसकी पर बाह न करें। जसे वहीं छोड़ दें और तत्काल पीछे की चौकी पर सूचना दें कि शत्रु बढ़ता आ रहा है, वे सावधान हो जाय। बुझल के हवाई पट्टे को बचाना है। यह समाचार सुनते ही मेरे रोम-रोम में रोमांच हो गया और मैंने मन ही मन कहा—संसार में इन्सान की बहादुरी और त्याग की सीमा नहीं है। इतनी ऊँची जगह पर बुरी तरह घायल

होने पर भी सेनानायक अपने जीवन का जयाजल न कर अपने कर्तव्य का जयाजल करता है। वास्तव में भारत के इतिहास में वीरता की जो प्राचीन भाषाएँ हमने सुनी या पढ़ी थी उसका प्रत्यक्ष प्रमाण धाव के युग में भी मिलता है।

मैं उस स्थान से बर की ओर चल दिया। पर कमाण्डर के मेरे पास 'मुझे यहाँ छोड़ दो मेरी परबाह मत करो। मेरे हिमाय में घुँसते रहे। मैं तरह-तरह की कल्पनाएँ करने लगा। १८ हजार फुट की ऊँचाई पर क्या होगा। कैसे पहाड़ होने किठनी बर्फ होगी। कैसे मोर्चे छोड़े गए होंगे किस तरह इतनी शीत में सिपाहियों ने दुश्मन का मुकाबिला किया होगा? कम्पनी के कमाण्डर का क्या हुआ होगा? धनीय तरह की कल्पनाएँ ससय एव रोमांच मुझे एक घण्टे भर लेते जब भी मुझे इस बटना का स्मरण हो जाता।

इस बटना के बाद तो मुठ-बिठम के समाचार भी रेडियो पर सुनने को मिले, पर मेरी कल्पना को कभी बिठम नहीं मिला। जब भी मुझे एकान्त मिलता मूल्य में फँसी हुई विद्याल हिमालय की घाटियों में होने वाले मुठ के चित्र मेरी कल्पना में उतर जाते।

एक दिन मैं अपने कमरे में बीज एम ए० के एक विद्यार्थी को बीर सतसई के कुछ श्लोके समझ रहा था। उनमें एक श्लोक था—

सज्ज में लर पर लकी जल्ने पजर लज्जल ।

वाप में लकी धजर ली कुन कंठ समाल ॥

मैं इस श्लोक का अर्थ समझ ही रहा था कि इतने में मेरे पड़ोसी लक्ष्मण कम्पनी में आ गये। उन्होंने श्लोक कहे ही कहा—नया आप सब दिन किताबों से ही भाषा सबाते रहते हैं। जबरें सुनने का समय हो गया है बीर आपका रेडियो बन्द नका है। मैंने श्लोक का अर्थ पूरा करने का सोम स हाथ से रेडियो की ओर संकेत किया कि मैं रेडियो

बामू कर दें। रेडियो बामू करते ही सबरें प्रारंभ हुईं। मैंने बिचाबी को बिधा कर प्रपत्नी कुर्सी मेज के करीब खींचली और सिगरेट धमा कर ध्यान से सबरें सुनने लगा। इतने में सुनाई दिया—क़ुमामू रेजिमेण्ट के मेजर सैतानसिंह ने सदाश क्षेत्र के चूमूम हवाई घड़ों की रखा के लिए लड़ते हुए प्रसाधारण वीरता दिखाई, जिसके उपलक्ष में राष्ट्रपति ने भारतीय सेना के सर्वोच्च सम्मान का सूचक पदक 'परमवीर' पदक प्रदान किया है। और मेरी कम्पाण्डर बानी कल्पना ने मेजर सैतानसिंह की प्राकृति उभर कर सामने धा गई। थड़ा और प्रेम से मेरा हृदय गद् गद् हो गया। बूझते ही क्षण सुनने को मिला कि ब पुत्र क्षत्र में बुरी तरह घायल हो मरे थे और धनी तक सापता हैं। अपने हाथ की बलती हुई सिगरेट को भूल कर मैं फिर कल्पना में डूब गया क्या हुआ होगा सैतानबी का? क्या उन्हें वीरवति प्राप्त हो गई या दुस्मन घायल अवस्था में उठ कर से गये? इस विस्मय की दुबल स्थिति में कई दिन और निकल गये। कई लोगों से मैं पूछता भी रहता थायद कोई खबर कहीं से मिल जाय। उनके माई और रिश्तेदार भी मेरे परिचित हैं। उनसे भी मैंने कई बार पूछा पर उत्तर निराशाजनक ही मिलते रहे। कई दिनों की असमंजसमयी स्थिति के बाद समाचार मिले कि उन्हें जिस स्थान पर छोड़ा गया था उसी स्थान पर उनका एक भारतीय सेना की एक टुकड़ी ने खोज निकाला है। न मामूम क्यों यह मैं धाक भी नहीं समझ सकता—न मुझे हर्ष हुआ और न दुःख। उन समय प्रसन्नता धबधब हुई जब पता लगा कि उनका एक बहूँ से बीधपुर लाया जायेगा और पूर्ण सैनिक सम्मान के साथ बाह-संस्कार होगा।

इन सब घटनाओं की सूचनाओं के साथ जो कल्पनाएँ ब माबोद्देश्य समय-समय पर होते रहे, वे बेव के लिए बलिदान हो जाने वाले एक योद्धा के प्रति भावमयी खडावक्ति के रूप में मेरे मालस में सज्जीत हो गए। उसमें सैतानसिंहजी के साथ मेरा क्यों का ससर्ग और उनकी

स्वक्षिप्तमत विरोधताएँ अपना विरोध रंग बोलने में समर्थ हुई थीं और एका एक उस परमवीर के बलिदान ने मुझे मातृभूमि के लिए प्राण त्याग कर करने वाले वीरों के प्रति अठ्ठाबलि प्रपिठ करने के लिए उन्हें माय्यम जुगने के लिए बाध्य कर दिया। यह काम्य ही मेरी अठ्ठाबलि है और यह अठ्ठाबलि ही मेरा काम्य है।

भारत के उस सपूत परमवीर शैतानसिंह की जीवन सम्बन्धी कुछ बातें जानने का आग्रह भी मैं पाठकों से करूँगा। श्री शैतानसिंह का जन्म बोजपुर जिले की फत्तौरी तहसील के बाणासर ग्राम में १ दिस० सन् १९२४ में हुआ था। उनके पिता श्री हेमसिंहजी बोजपुर रिसाले में अफसर थे। पहिले विश्व युद्ध में उन्होंने बड़ी बहादुरी दिखाई थी और फ़ास में भाग्य भी हुए थे। उन्हें इस प्रकार की वीरता और श्रेष्ठ सेवाओं के लिए प्रो० बी० आई० आदि सम्मानसूचक पदवी ब्रिटिश सरकार से मिली थी और युद्ध के बाद वीरे-वीरे वे सेफ्टीनेट कर्नल के पद पर पहुँच कर रिटायर हुए। इस प्रकार श्री शैतानसिंह को वह उच्च कोटि के संस्कार की परम्परा अपने पिता से मिली।

श्री शैतानसिंह को मेट्रिक तक की शिक्षा राजपूत हाई स्कूल बीपासनी में मिली थी। उस समय मि ए पी० कोल्ल उसकी प्रिन्सिपल थे। बीपासनी स्कूल अनुशासन एवं शैल-कृत के लिए प्रारंभ से ही प्रसिद्ध रहा है। वहाँ यह भी जल्दजानीय है कि प्रथम विश्व युद्ध में वीरता के लिए सबसे बड़ा सम्मानसूचक विकटोरिया क्रॉस इसी स्कूल के विद्यार्थी श्री योशिनसिंहजी को मिला था। इस स्कूल ने भारतीय सेना को अनेक विपाही और सैनिक अफसर समक-समक पर दिये हैं। श्री शैतानसिंह त्रिभुवन हाउस (बोर्डिंग भवन) में रहा करते थे उसी हाउस में रहने के कारण उनके गिरमिट्टर सम्पर्क में आने का मुझे अवसर भीमाय्य मिलता रहा था। वहाँ तक हम साथ रहे। उनका सभी विद्यार्थी बड़ा सम्मान करते थे। वे बहुत कम बोलते थे और

छात्रगी उनकी मुख्य परीक्षा थी। क्रोध में घाना तो वे कभी जानते ही नहीं थे। उनका जीवन वास्तव में बड़ा निरक्षर और निर्मल था। श्रीपासनी स्कूल का बच्चा-बच्चा ही नहीं अपितु बोजपुर के अधिकांश विद्यार्थी उन्हें फुटबाल के प्रसाधारण खिलाड़ी के नाते मसी प्रकार जानते थे। वे इतने सरल स्वभाव के थे कि सोम-बाप उनसे मजाक करने में भी हिचकिचाते थे। हमारे एक प्रख्यापक ऐसे अवश्य ब बौ उन्हें इतना शान्त देख कर कभी-कभी मजाक के तौर पर कहा करते थे—यह बहुत सीधा लड़का है पर कभी बहुत बड़ी संतानी करेगा। धावद उनके ये लब्ध चरितार्प होने के लिए १८ नवम्बर १२ के युद्ध की प्रतीक्षा कर रहे थे।

सन् १९४३ में उन्होंने हाई स्कूल पास कर असबंत कॉलेज में प्रवेश लिया। फिर भी उनके प्राथम्य और स्वभाव में कोई अन्तर न आया। फुटबाल के प्रसाधारण खिलाड़ी के नाते पूरे कॉलेज में वे सम्मानित थे। सन् १९४७ में बी० ए० पास करते ही कर्नल मोहनसिंहजी ने उन्हें युवा हॉर्स में क्वेट के पद पर ले लिया। कर्नल साहब उनके व्यक्तित्व और अनुशासनप्रियता पर बड़े प्रसन्न थे। रियासतों के विषय के बाव में भारतीय सेना में आ गये और निरन्तर सगन तथा वसता के कारण सन् ५३ में कैप्टन के पद पर पहुँच गये। उनकी सेवाओं से उनके अफसर सदैव प्रसन्न थे। नागा हिस्स तथा गोघा एकमत में भी उन्होंने बहुत प्रख्या कार्य किया था। सन् ६२ के क्रान्त महीने में ही उन्हें मेजर का पद मिला था। लद्दाख क्षेत्र में चीनियों के आक्रमण का मुकाबिला करने के लिए कुमायू रेजीमेण्ट के मेजर के नाते वे बहादुरी तैनात थे। कृति १८ हजार की ऊँचाई पर जुलाई १५ मीस पूर्व ब्रिगेड की ओर उनकी सेना ने मोर्चे लगा रखे थे। १८ नवम्बर की सुबह से मेजर शाम पड़ने तक इनकी कम्पनी ने सुरमत के कितने ही हमसे विफल किये और सिकड़ों को प्रणशायी किया। बहादुर

सेना के बहादुर सेनापति ने पीछे न हटने का हड़ निश्चय कर सेना को प्रेरित किया और स्वयं सड़ता हुआ चायस होकर निर पड़ा तथा घम में बही वीरवति को प्राप्त हुआ ।

जैसा उस व्यक्ति का चरित्र था उसी के अनुकूल संक्षय किया और जैसा संक्षय था उसी के अनुसार कृतव्य कर दिखाया ।

१८ फरवरी को विशेष विमान द्वारा उनका शव जोधपुर के इबाई भद्र ने कर्नल मोहनसिंहजी के बैगमे पर लाया गया । वहाँ उनका परिवार और राजवराने के साथ उपस्थित थे । वार्षिक सम्कारों के पश्चात् शव सफ़्टि हाउस में लाया गया और वहाँ से मंत्री मण्डल विधायकों और प्रतिष्ठित नागरिकों एवं सम्पूर्ण सैनिक सम्मान के साथ जुगुस के रूप में सोबती गेट और कचहरी प्राथि स्वामी एवं मातां मे होता हुआ कागा समझान स्थल पर ले आया गया ।

वहाँ राष्ट्रपति श्री और से वेक्टर जनरल भगवतीसिंहजी ने पुष्पहार चढ़ा कर अष्टाब्जलि अर्पित की । राजस्वान के मुख्य मंत्री श्री मोहन लाल मुन्नाड़िया ने मंत्री-मण्डल के सदस्य मंत्रियों सहित सम्मान प्रदर्शित करते हुए अष्टाब्जलि अर्पित की । कर्नल माहनसिंहजी भाटी व जोधपुर राजवराने के माननीय सदस्यों ने अष्टा के मुमन मुत्त वीर के शव पर चढ़ाये । जनता की अपार भीड़ के बीच इस युव के महान् वीर का शह सम्कार सम्पन्न हुआ ।

इधर मृत्यु अस्त होने को आया । अंतरिक्ष की पलकों भारी हो रही थी और उधर समझान के प्रबारे शान्त हो रहे थे । मैरी कल्पना सन्धों की मजिस पर उठर आने को उत्सुक हो रही थी ।

परमवीर



मेबर क्षैतानसिंह



सिरजण वाळे सिरजिया ,
अणगिण बिरछी बेल ।
वा बिरछीं घिन छीहई ,
फळे अमरफळ बेल ।

देव घीर वानरों की युद्ध-परम्पराओं की प्रत्येक घनिष्ठ रेखायें पुरुषों में प्रकीर्ण हैं। प्रायः फिर प्रकृति उसी प्रकार के संघर्ष के लिए तत्पर प्रतीत होती है।

यहाँ लड़े गये जमासात बुद्धों से प्रत्येक बार शोषनाम के मस्तक ममे हैं। पर प्रबन्धी बार तो कैलास पर्वत के मस्तक के मम जाने का भी प्रवेसा है।

कपटी शत्रु ने 'हिन्दी चीनी भाई-भाई' के शोक शोक कर मित्रता का दिखावा किया। घीर फिर भीका देखा कर पाठ कर बैठा। यों उस क्षुद्र-प्रिय बेरी ने कैलास भिरि की पवित्रता पर बाँव लगा कर मित्रता में विष शोक दिया।

देवासुर सुभ्राम रो ,
 पही पुराणा लीक ।
 पसवाही केरै प्रफत ,
 पाथी भाज उहीक ।

घमसाणां घमसाण में ,
 सीस मुकीज सेस ।
 भवकाळै घमसाण में ,
 हरगिर मुकण भदिस ।

वण भाई भेळप करी ,
 दगौ कियो मल दाव ।
 पिसण पुळे हरगिर हिये ,
 कीन्हौ कपटो घाव ।

भीम के मुठ-प्रमियाण प्रारंभ करते ही
 दोनों सेनाओं में हमबल मच गई
 और मुठ-मोर्चों के लोहे बाले के साथ
 ही शान्ति के दूत कपोत उनमें बचना
 दिये गये ।

दोनों और की लोपों से घाय की लपटें
 बपकने लगी और दोनों पक्षों के बीच
 मारी मशुता छा गई । लड़क-लड़क में
 कर्तव्य रत वीर सैनिकों के शस्त्रों से
 विजयिणी कौपले लगी ।

दोष के लण्ड-लण्ड में मुठ का बाता
 बरण जा गया । हर मामल के बेहरे पर
 क्रोध की लहरें हिंस्रों मारने लगीं । और
 दोष प्रेम में मत्तबाली सेनाएँ मातृभूमि की
 रक्षा के लिए दूने लोच से मिड़ गईं ।

घाळी चीन चिंतावियो ,
 हळधळ भणियां होत ।
 गडिया खुदतां मोरघा ,
 सांयस दूत कपोत ।

भारावां भरुतां भगन ,
 दुहु पक्ष पडियो ताव ।
 सांदक सदक हळफळै ,
 भावघ क्षिष सिळाव ।

वेस पूर सहरां उठी ,
 बहर बैहरें रोस ।
 भजकी वतन च्यारणी ,
 फौजां दूणै जोस ।

टिड्डी बल के समान घसंख्य भीनी-बाहिनी
 ने जब बुगुम पर घाकमण किया तब
 कुमायू रेविमेष्ट का मांभी मेजर हीतान
 सिंह गबरान की भांति सामने पर रोप
 कर शत्रु-सेना से भड़ गया ।

विपत्ति के बादलों ने जमड़ कर गोलियों
 की बीछारें प्रारम्भ कर दी । कौतास का
 दुर्ग उन भयंकर प्रहारों से कम्पित हो
 गया और महान् हिमगिरि में भी इस
 भयंकर घाकमण से बरार पड़ने की
 स्थिति पैदा हो गई ।

पुत्र की उस मरणात्मक बड़ी में हीतान
 सिंह ने अपने वीर छात्रियों को लसकार
 कर उरसाहित किया । इस प्रकार उस
 महा वीर ने प्रबहुमान प्रलय में बुढ़वा
 से अपने पर रोप दिये ।

चीनी कियो चुसूळ गळ ,
 टीढी दळ ज्यू जग ।
 तदे कमायू फौज रो ,
 मांभो ह्यो मतग ।

भापत जळघर ऊमड़े ,
 गोळी ज्यू वीछार ।
 गड़ धूज फेळास रो ,
 हिमगिर तिड़कण-हार ।

सिण वेळा लसकारिया ,
 सैताने निज सूर ।
 घहती परळै वीच में ,
 पग रोपे भरपूर ।

जब सत्रुबाहिनी के मोर्चों की प्रबल मार से प्रविचलित निरिच्छा भी विचलित हो उठा तब उस मिठभापी रीतानसिंह ने अपने वीर कर्तव्य का स्मरण किया और अपने हृदय में धैर्य धारण कर बृहता से सत्रु के सम्मुख उठ गया ।

उस वीर ने भारत सत्रु प्रसंग्य चीतियों को भीठ के बाट उतारा व अन्य दुश्मनों के हृदयों को विचलित कर दिया । अन्त में उसकी पूरी सेना वीरता के साथ सज्जी हुई वीरमति को प्राप्त हुई तथा वह स्वयं पावों से लड़-मुहल होकर बराघापी हो गया ।

विपत्ति की उस भयानक बेसा में साधियों ने अपने प्रिय नायक को सिद्धि में ले जाने के लिये उठाया । ऐसे विप्लव क्षणों में उस नायक की बुद्धि ने तो एक बार वहाँ से हट जाने का इरादा किया पर उसी क्षण किसी भी कीमत पर न हटने का आग्रह हृदय कर बैठा ।

मितभासी करसब करण ,
 धरण हिये ब्रह्म वीर ।
 परम वीर पग रोपिया ,
 हिमगिर ह्यां अघीर ।

अणगिण चोनी भूजिया ,
 पिसणां सळबळ जीह ।
 सेन गई गत वीर री ,
 घाषा पड़ियो सीह ।

आंग उठायो साधियां ,
 अयसी वेळा मांय ।
 अकल कहे हट जावणी ,
 हियो कहे हट नांय ।

इस प्रकार बुद्धि और हृदय के बीच कुछ क्षणों तक उस वीर के हृदय में संघर्ष रहा पर अन्त में अपने हृदय को हथेली पर रख कर सड़ने वाले वीर ने न हटने का ही निश्चय किया ।

रणांगण में धरि-समूह को सतकार कर वह बुगुने बोल से सड़ा और अम्ममूमि की रक्षा के लिए बीबन के अन्तिम क्षणों में भी उखड़ा वह गदगद करीर कमल के समान विकसित हुआ ।

जब उसके शरीर से रक्त बह कर हिम रेखा में प्रविष्ट होने लगा तो धीबिष्य के कारण पत्तों तो अवरय झुक गई । पर उसने बदन के ध्वज को भीषे नहीं झुकने दिया और उन अन्तिम क्षणों में भी उसके शरीर में बोल की जहर्तें उठ रही थीं ।

अकल हिये रा ऊरवा ,
 सुघरसै मन माय ।
 हियो हथेळी रासणी ,
 आसिर हटियो नांय ।

लडियो दूणै बोस सूँ ,
 आफळियो अगराज ।
 पल पल पोयण फूल ज्यूँ ,
 अग विकस्यो घर काज ।

रगत बह्यो हिमरेख में ,
 पलक भुकी उण पांण ।
 पण घअ नह भुकियो घरा ,
 उससै घप आपांण ।

हे ध्वजवाही वीर वीरानसिंह ! तुने राष्ट्रध्वज की मर्यादा की रक्षा कर अपने शत्रु ध्वजवाहीपने की खरिदार्य किया । तुम्हारी कीर्ति की पताका प्रगल्भ काम तक वासुमन्त्र में लहराती रहेगी और सदा-सदा के लिए वीरों को अपनी ओर आकर्षित करती रहेगी ।

रणस्वल्प में मर जाना पर मरण-मय से रणविमुख न होना वह कर्तव्यों की मनाबि परम्परा रही है । हे हेमसिंह के पुत्र ! तुमने रण में प्रणव-विद्यार्जन कर उस आश्रम परम्परा का कृष्ण निर्वाह किया ।

हमने बाँझुरे उस वीरों की मरण-हठ की घनेक वीरक नाबाएँ सुनी और पक्षी भी पर है वीर । प्रत्यक्ष में तो तुम्हारी ही वीर मृत्यु से वीरों के वीरमय बलिदान का आभास कर पाये हैं । वास्तव में ऐसे वीरों का मरण बन्ध है ।

धज राक्षण धजवीर धू ,
 धज - बधी सेतान ।
 तो धज सधा सुहावसी ,
 कीरत रै असमान ।

मरणौ पण हटणौ नहीं ,
 भा रण खेतां रीत ।
 भली निभाई हेम रा ,
 रजवट हृदी रीत ।

सुगिया धर भणिया घणा ,
 बाका बळहट धोर ।
 परतस्र म्हे गुणिया हमें ,
 रग रजवट रण धीर ।

हे वीरवर ! जिस हिमगिरि का चिर
 आकाश को स्पर्श किये रहता है, तू ने
 उसी विरिटाज हिमालय पर जाकर
 शत्रुधर्मों से लोहा तिरा । पृथ्वी के धर्म
 वीरों के मस्तक तो आकाश को छू पाये
 हैं मगर तुम्हारे मस्तक ने तो स्वर्ग को
 जा छुमा है ।

जिस प्रकार आकाश में बिजली धीर
 बरणी में बीच सदैव संचित रहते हैं, उसी
 तरह वीर पुरुषों में पीठ्य सदैव बिद्यमान
 रहता है धीर वह समक क्षण पर ही अपने
 पूर्ण रूप में प्रकट होता है ।

बीता के उपदेशानुसार धर्मज्ञ ने कर्त्तव्य
 रत होकर महाभारत का युद्ध बीता पर
 उसके बाद कर्त्तव्य भुला कर उसने
 अस्व डाल दिये धीर हिमालय पर चितित
 अवस्था में नमने के लिये पहुंचा ।

जिण गिर रौ सिर भाम लग ,
 तिण पर लडियो जाय ।
 भीर भडा सिर भाम लग ,
 सो सिर सरग छुदाय ।

भाम तजै ना बीजळी ,
 घरणी तजै न बीज ।
 पौरस पुरसां कम्मळै ,
 अद वेळा वरतीज ।

गत गोता उपदेस हित
 धरमण जुघ में जीत ।
 काम तज्यो ससतर तग्या ,
 धायो अठ सर्चीत ।

परन्तु उसी हिमालय पर तू खरब बहूण
कर मातृभूमि की रक्षा के लिये कर्मरत
हुया । भसा गीता के प्रससी म्याल का
इससे बड़ा प्रमास कीगसा हो सकता है ।

जिस हिमालय की ओर में पार्वती ने
बाल भीड़ों की उसी हिमालय की गोद
में हेमचिह्न के पुत्र ने चातुर्वर्ष्य रण
केलिया की ।

एक ही ओर में भीड़ा करण के कारण
हिमालय की पुत्री बंड़ी ने उसे भाई के
समान माना और तभी उस चिबडी की
पत्नी ने तेरे ब्रूम कर मरण के पश्चात्
भी तेरा चिर अपना खप्पर बनाने के
लिये नहीं लिया ।

उण जागा ससतर सियां ,
 लडियो यू सत्तान ।
 गीता वाळ ग्यान रौ ,
 धीर किसी परमाण ।

हेम सुता जिण खोळ में ,
 वाळपण की केळ ।
 तिण जागा सुत हेम की ,
 समर सयांणी केळ ।

अेक खोळ रमियां पछ ,
 घंटी जाण्यो आत ।
 तिण कारण जूकार रौ ,
 सिद-धण नियो न माथ ।

हे श्रीतानसिंह ! संघार भसे ही तेरे अरिष से परिचित न हो पर मैं तो तुम्हें मनी प्रकार से जानता हूँ । प्राण न रहने पर भी तेरी देह को बर्ष नहीं गला सका वास्तव में तू मुनिष्ठर के समान था ।

हे वीर ! जब तुम्हारे प्राण-बन्धु उड़े तो तुम्हारी विधेपताएँ भी उनसे साम्य रहने वाली वस्तुओं में आ मिलीं । तेरा तेजपुंज सूर्य की मित्रा तेरी पावन आत्मा की अमरता अपने सजातीय अहमा को मिली व ध्रुव तारे को तेरे मन की अमरता मिली वीर तेरे हृदय की पवित्रता आकाश-वंश को मिली ।

हिमालय पर बैस रत्ना के निचे तुम्हारा रक्त बहा । वहाँ से बहने वाली नदियाँ जय रक्त को भारत भूमि पर चारों ओर फैला देवी । जय रक्त के प्रस से युक्त जल स खेतों की फसलें अब तक सहजहाती रहेंगी तब तक तेरा नाम इस संघार से नहीं मिटेगा ।

परमवीर

अगत भलां मत जाणओ ,
 हूँ बाणू संतान ।
 प्राण गया मन न गळयी ,
 जुषिठर सो सतधान ।

सूरज मिळियो तेज सू ,
 ससिकर बस सुधग ।
 घू मिळियो घू सू भडिग ,
 पावनता नभ-गग ।

रगत बह्यो हिम ऊपरां ,
 नदियां घर ले प्राय ।
 बंद लग सहरे सेतवा ,
 धारो नाम न जाय ।

परमवीर

पो जी कुल बिसेरे फसले पकेगी
उनके फल-फल पर तुम्हारा नाम मन्त्रित
होया । हे वीरानसिंह ! तुम्हारे बहिर से
पोषित फूल-फूल की पंजुड़ियों में तुम्हारे
बसिदान की धीरम सबैष भइकटी रहेनी ।

यसो को निबिध्न पूर्ण करवाने के मिय
हमने वीर्यो के साथ लड़ कर अपने सिर
बिसे हैं धीर ऋषियों का वृत्त निभाया है
किर भला धीर मोडाघों के रहत हुए
ऋषियों का पवित्र गृह हिमासय धनुषो
हाथ कैसे पीता वा सकता है ।

हे धवल (निर्मल) हृष्य के मारण करने
वाले । तू वस्तुतः धवल (वैस) के समान
ही प्रचण्ड था तभी तो तुने धवलभिरि के
दिवार पर लड़ कर रण-बोप किया
बिसेसे धनु-बस बिन्न बिबिध्न हो गया ।

फूल खिलै फसलां पके ,
 कण कण धारी नाम ।
 फूल फूल रो पांखड़ी ,
 सुवस धूं सेतान ।

पूरण जिग सिर सौपिया ,
 राखण रिखिया नेम ।
 भड ऊमां रिख गेहडौ ,
 भिळ घवळ गिर केम ।

घवळ हिय रा धारणा ,
 घवळ जिसी प्रबड ।
 घवळ गिर बड तडियो ,
 धरि-दळ संड विहड ।

रण में असाधारण वीर्य के साथ लड़ने वाले रण-वीरों ने समुद्र और पृथ्वी पर अपनेको मुड़ किया है पर तू तो मुड़ के लिये ठट उस जगह पहुँचा जहाँ धाकाश में उड़ने वाले बोहे ही पहुँच सकते हैं ।

ऐसे अमाम्य स्वाग पर पहले तो पहुँचना ही कठिन है और फिर जहाँ हवा (ऑक्सीजन) की कमी के कारण ठाठ ठक सेने में कठिनाई होती है । ऐसी जगह असाधारण मुड़ कर के तेने जनु-बलों को पराजित किया है ।

हे वीर ! जिस दिन की संख्या को तेरे पाँखों की अंतिम ज्योति सूर्य में समाहित हो गई उसी संख्या को तेरे स्नेह के सिञ्चित दीप पूरे देश में जलमया उठे ।

रणधीरा रणवीर के ,
 जल थल कीधा जग ।
 पू लडियो पहुँचे जठे ,
 उठणा भन क्षयग ।

परधम दुरसभ पूगणी ,
 पछ ज लेणी सांस ।
 उण जागु दुसमण दळां ,
 भूलाई येँ सांस ।

तो नैणां री जोतडी ,
 जिण दिन भरक मिळीह ।
 नेह भरीज्या दीवटा ,
 घर घर जोत जळीह ।

परमवीर

अन्य धीपक लो लेल समाप्त होने पर या पदम के झोंक माथ से बुझ आवेगे पर तैने देह प्रेम का जो मखि-बीप बीप्तिमान किया है वह मुर्गो युर्गो तक कास क झमेटों से भी नहीं बुझेगा ।

आज राम सकमण भरत धीर सीता भी सघरीर नहीं रहे पर जम्होने असुरा को पराजित किया ना—ससकी मादवार रिपावनी के रूप में सबेब विद्यमान है ।

‘करोड़ विवाही राज करौ’ की परम्परा केवल धाधिसू के रूप में ही संसार में प्रचलित रही है पर हे वीर ! तैने लो मात धादीबाह की परम्परा को इस कलपुय में काल जैसे बिकट धरि को जीत कर सत्य सिद्ध कर दिया है, अतः तु वास्तव में अनगिनत वर्षों तक बहौ की बलता की स्मृति पर राज्य करता रहेगा ।

शौर दिया बुझ जावसी ,
 भोलै नेह गयांह ।
 देस नेह मणि-दीप शौ ,
 बुझै न भूपट जुगांह ।

राम गया लिछमण गया ,
 भरत सिया सह शोप ।
 भसुरां पर सुर-जीत री ,
 जगै दिवाळी जोत ।

त्रोड़ दिवाळ्यां राज री ,
 कोरी भासिस रीत ।
 कळजुग मे सांची करी ,
 फाळ जिसी भरि जोत ।

परमवीर

इस पृथ्वी पर नित्य प्रति कई सौ बम्ब
बोते हैं और कई मरते हैं, दुर्घटनाओं
का यही काम है पर जो लोग दृष्ट-रक्षा
के लिये ब्रह्म कर काम धा यजे के पात्र
मर कर भी समर हैं ।

'जीवन एक कमा है' इसे सभी बुद्धिमान
व्यक्ति मानते हैं परन्तु 'मरना भी एक
कमा है' इसका सच्चा पारखी तो हे
पितामहि ! तू ही था ।

हे पितामहि की पत्नी । तू अपने मन में
बहु विचार मत माना कि तेरा पति इस
सगर-सागर की मछलियों में ही तुझे छोड़
कर जाता था । उसने तो समस्त देश की
पान्नाही की डबमगाती हुई नाव की
पतवार समानी है ।

के जलमै के मर सप ,
 धारा धर जूनाह ।
 जे अून्या हित बेस रे ,
 मरिया प्रमर हुवाह ।

कळा जगत मे जीवणी ,
 मानै सह भुषवान ।
 मरण कळा री पारसी ,
 वू मोटी सैतान ।

धण मत घोसी प्राणजै ,
 पिव छोडी मरुघार ।
 प्राजादी रो नाव री ,
 पत भयली पतवार ।

परमवीर

तेरे शरीर पर क्षोमायमान होने वाले
गुहायमूचक मूङ्गार भाव उठर गये हैं
तू इसका अफसोस मत करना तेरे पति
ने देश रक्षा के लिये और पति प्राप्त कर
अपार यश अर्जित कर के समस्त देश को
मृगारिष्ठ कर दिया है ।

बैसे बिचबा स्त्री का बेष बड़ा ही बिरभा
होता है पर तेरे बिचबा बेष पर तो सहस्रों
मुरमि बेश नी त्पीछावर किम चायें तो
पोके हैं ।

बिबाह के अक्सर पर बुद्धिनु के लिय
अनाये नये कपड़ों को बिचबा अचने हाम
से नहीं छूटी (क्योंकि यह अशुभ माना
जाता है) पर यदि तू अपनी दृष्टि से
ही उन्हें स्पर्श करे तो भारत भक्ता का
मस्तक कभी नहीं झुकेगा- क्योंकि उन
कपड़ों को पहनने वाली बुद्धिनु के पति
तेरे पति के समान ही देश के लिये कुर्बान
होगे ।

घण मत्त जणि उत्तरियो ,
 सो सन री सिणगार ।
 (उण) सांप्रत देस सिगारियो ,
 जस रै जीतणहार ।

निपट विरगौ जगत में ,
 विषवा हृदी वेस ।
 धारीजे इण पर थुदा ,
 सहज सुरगा वेस ।

वरो वेस चढ़तां पका ,
 विषवा छुव न हाय ।
 यू निरखै निज नण सू ,
 झुकै न मारत माय ।

परमवीर

हे श्रीगान्धिविहारी माता ! तू यह मालने की भ्रम मत करना कि तेरा पुत्र धार इस संसार में नहीं रहा । यह तो इस के लिये कुर्बान होकर धर केवल तेरा ही पुत्र नहीं रहा भारत माता का पुत्र हो गया है ।

हे माई ! तू अपने मन में ऐसा भ्रम पैदा मत होने देना कि तुम्हारा माई धार नहीं रहा । उसने तो अपने वीर हृदय से समूचे भारत का विख्यात आतृण समुहों पार के देशों तक फैला दिया है ।

हे पुत्र ! तू धार अपनेमाप को पितृहीन मत जानना । तू उस परमवीर का पुत्र है जिसने देश-रक्षा के लिये वीर-व्रति प्राप्त की है । इस पर सर्वत्र वीरव करना ।

माधव इसी न मानधे ,
 पूत रह्यो नी माध ।
 भारत मां री सुत ह्यो ,
 पारी सुत हण काज ।

भाई भरम न प्राणजे ,
 भ्रात रह्यो नी प्राज ।
 उण भारत री भायपी ,
 राक्षी समदा पाज ।

पत न प्राणे औरती ,
 पिता रह्यो नी प्राज ।
 पूत ह्यो हण बाप री ,
 हण पर राक्षे नाज ।

परमबीर

हे शैतानसिंह के लोहियो ! तुम अपने मन में यह दुष्ट चक्र मत्त माना कि हमारा संतरंय लोही शैतानसिंह हमें छोड़ कर चला गया । वह बीर तो पात्र भारत के सिर का सेहण और अपने सिधे गौरव की वस्तु है ।

हे पर ! तू यह संघम मत्त करना कि तुम्हारा स्वामी पात्र तुम्हारी सारी सजा बट त्याग कर चला गया है । उसने तो पात्रान्ताघों से मुक्त कर भारत के प्रत्येक पर की सजाबट और लज्जा की रक्षा की है ।

हे बहिन ! तू भी यह मत्त समझ बैठना कि तुम्हारा शिब माई बिना रात्नी बँबाये ही स्वर्ग सिधार गया । उठ परम बीर की बिधान भुजा तो शैतान-मुषी द्वारा बाँधे गये सुरदा-सूत्र से सोया पा रही थी ।

सण न सकी प्राणजे ,
 छोड गयी सैतान ।
 भारत रे सिर सेहरी ,
 प्रापा रे उर मान ।

घर मत प्राणे करवी ,
 घणी गयी तज साज ।
 उण भारत कर राखली ,
 घर घर भारत साज ।

वीर गयी यिन राखडी ,
 वहन इसी मत प्राण ।
 हेम-सुता थापी हुती ,
 राखी राखण मान ।

परमवीर

हे बहिन ! अत्यन्त स्नेह के साथ तेरा
माई तीव्र घाबि ल्यौहारों पर तुझे चुनकी
घोड़ाता वा घाब जसी के मस रूपी रंभों
से रंभा हुआ बनकिया (चुनकी विषेप)
घोड़ कर बरती नारी-वीर्य का अनुभव
कर रही है ।

इस संसार में तन मन और बरती को
बीतने वाले तो कई साहसी पुरुष हुए हैं
परन्तु मन पर विजय पाने वाले तो
तुम्हारे जैसे बिरसे ही व्यक्ति है ।

इस संसार में पुरुषों-पुर्षों से कितने मानव
शरीर क्षान्त-कमजिद हो गये उनका कहीं
कोई सेवा-जोबा नहीं । परन्तु जिन
वीरों ने देह को नवरर समझ कर देह के
लिए प्राणोत्सर्ग किया है वे वीर ही
समर हैं ।

भोड़ाई घण नेह सू ,
 घूनड तीज तिवार ।
 उण जस रगियौ घणकियौ ,
 घोड़े घरणी नार ।

जीतं तन जीतं धरा ,
 जीतं घन रो साण ।
 तो जिसड़ा मन जीतणा ,
 धिरळा नर सैतान ।

फितरी नर देही गई ,
 जग में जाण न घाज ।
 देह गिणै माटी धिके ,
 भ्रमर बतन रै काष ।

परमवीर

तेरा प्राण-हस स्वर्गिक विमान में स्वर्ग
को पहुँच गया तब दूसरे विमान में कुत्तों
से सही हुई तेरी कुसुमवत बेहूषर को
पहुँची ।

हे वीर ! बाल्यकाल में तू ने तुम्हें
पामने में हुल्लासा घोर बर्षा की ठंडी
हवा ने तेरे साथ स्नेहमय श्रद्धाओं की
बीजक के अंतिम समय में हिमालय की
ठंडी हवाओं ने तुम्ह पर शँबर बुसा कर
घपना करीम्य पूरा किया ।

घाटी के समय बड़े धीक से तुम्हें पर
शँबर बुसाया जाता है पर तू तो कीर्ति
रूपी सुन्दरी का बरण कर के सो रहा है
इसलिए स्वर्गिक अण्डरायों घपने नाबुर
हवाओं से तुम्ह पर शँबर बुसा रही हैं ।



बोपपुर हवाई अड्डे पर मेजर शैतानसिंह का घब हवाई अड्डा से उतारा जा रहा है।

हंसो सरग सिधावियो ,
 सरग विमाण उडेह ।
 फूला लद भाई घरे ,
 फूल सरोसी देह ।

लू लढायी पालणै ,
 बावळ करी किलोळ ।
 भंत सम तन ताहरै ,
 खवर पवनियो ठोळ ।

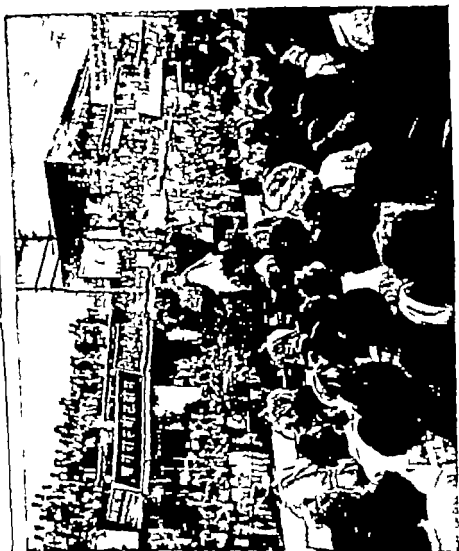
खंवर दुळ घण चाव सुं ,
 वर परणती वेळ ।
 पगो-वर पीढ़े अछर ,
 खवर दुळ कर-केळ ।

परमवीर

शोधपुर के जम-जम पर जब तेरी घब
यात्रा का बुभुसु निकमा हो धनमठ
उत्साह के साथ शहर की समस्त जनता
तुझे शहीदसि देने के लिए उमड़ पड़ी ।

तारी जनत ने पहली बार तई दृष्टि से
पुरष की कीमत को साँका । उन शिखरों
ने मर रत्न का मूल्य सपनी छीप कपी
पसकों पर शान कर परछा ।

कुंधारी कथ्याओं के हृदय में एक वीर
घाबरई बर की घनात कल्पना उठी ।
पथलता सुन्दरियों ने तेरी पत्नी के
गौरवमय संसर्ग का ध्यान किया और
बूढ़ा माताओं ने सही माने में सपुटी होने
के घाबरई का धनुअव किया ।



छोसली गेट पर भी वीरगणसिंह को अंतिम भ्रष्टाचारि देने के लिये जनता की भीड़—सेनिक सम्मान के साथ घबरा थापा जा रहा है।



मेजर बीतानसिंह का सब मागोरी गेट से चीनक सभिकारी घपने कयी पर
उग्र कर समथान भूमि को से जा रहे हैं।

बायें से दायें- मेजर दरंगसिंह कैप्टन डी एम तनया कैप्टन मदनपाल

जोध नगर मग हालियो ,
 जिण दिन सूम्ह जळूस ।
 जावक जनता ऊलटो ,
 हिवडे दूण हळूस ।

नजर नुषेली निरक्षियो ,
 नारी नर री मोल ।
 जोस रतन नै जोखियो ,
 सीप पलक पर तोल ।

कंवरो उर वर जागियो ,
 परणी परणी चीत ।
 मात सपूती होण री ,
 जाणो सांधी रीत ।

परमवीर

राष्ट्रपति की घोर से फूलों की ध्वनि
में कर तुम्हें सम्मान दिया क्या । मंची
गण अपना वीर का सम्मान करते हुए
मन-मुग्ध से हो गये । अपार जन-समूह
का हृदय सदा से धातुकित हो उठा ।

दशताओं के सिर पर चढ़ाय जाने वाले
पूज्य भी हर क्षण झुम्झताये जाते हैं पर
हे वीर ! तेरे सिर पर चढ़ाये जाने वाले
फूल तो अपना सीमाम्य मान कर मानो
प्रफुल्लित हो उठे ।

हे वीर ! राष्ट्र-संस्कार के समय भारतीय
सेना की घोर से अत्यंत सम्मानसूचक
सलामी जब तुम्हें दी गई तो तुम्हें पर
चढ़ाये गये फूलों की सुबह घोर जन-समूह
के निःस्वात से समूचा आकाश आच्छादित
हो गया ।



मेजर जनरल भगवतीसिंह जी राष्ट्रपति की ओर से मेजर पीतामसिंह को
प्रथम मंडाबलि प्रथित कर रहे हैं

देसपती दीघौ कुरख ,
 फूल भजळी चाढ़ ।
 मत्रमुगष मत्री हुया ,
 उमगी जन-उर वाढ ।

फूल चढ़े सिर देव रे ,
 ती ही पण कुमळाय ।
 तो तन चढ़िया फूलडा ,
 फूल्या नहीं समाय ।

अत सलामी दी सुभट ,
 सेन घण सनमान ।
 जन उसांस फूलां मुवास ,
 भीछाड़ें असमान ।

न जाने कितने ही बड़े बड़े व्यक्ति हम
 काले की समझान भूमि में धा कर लो रहे
 हैं पर उन सब में इस युग का खूबसूर तो
 एक मात्र ही है ।

वैस रसा के लिए युद्ध में एण्डीरो की
 तरह शून्य कर प्राण देने के पश्चात् अपनी
 मातृ भूमि की गोद में सदा के लिए सो
 जाने जाने बग्य हैं । प्राण.जसे जाने पर
 भी उन बीरों की नरवर देह पण्डीर के
 समारोह की तरह सम्नास के साथ पूजा
 व सम्मानित की जाती है ।

स्मारक के रूप में बनाई जाने वाली छत
 रिये व बड़े से बड़े स्मारक किसी न किसी
 समय के बाद बह कर बर्छपायी हो जाती
 हैं । पर ठीक स्मारक तो हिमालय स्वय
 है वह अभी समाप्त होना अब संपूर्ण
 रूप से बल कर बह जायेगा ।



राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री मोहनलाल सुतारिया कूब बढ़ा कर धरानमि
धपिठ कर रहे है ।

के टणका नर पीढ़िया ,
 कागी हूथी कार ।
 पण एकल थूं पीढ़ियो ,
 हण जुग री जूंभार ।

धिन हसठो घर पीढ़णी ,
 रणधीरां री रीत ।
 प्राण गयां तन पूजवे ,
 गिणगोरघां री रीत ।

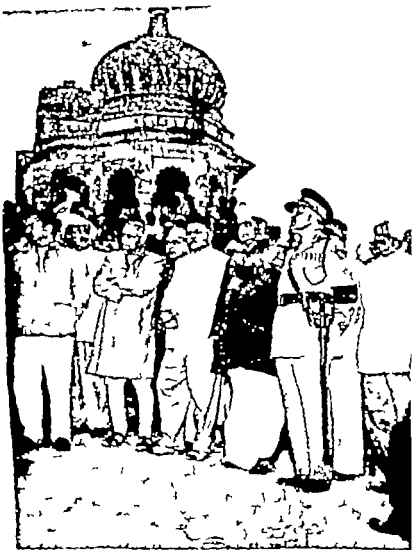
दिन लाग्यां छस्तरो उहै ,
 थडा जमी मिळ आय ।
 तूक थडी हिम धोळियो ,
 गळियां पूरो थाय ।

परमबीर

बिच मरुभूमि में पानी की बड़ी कमी है वहाँ इस प्रकार का घड़मुठ बस (धैरान सिंह) देखा हुआ बिचकी साक्षियों के हिमात्म्य की चोटियों पर जोर धारण के समय छाया की धीरे इस प्रकार अपनी मातृ भूमि की कोस को उद्वेगन किया ।

हमारे देश का जन-जीवन अगणित त्यों हारो से अक्षयित होता रहता है । म सभी त्यौहार निश्चित समय पर पाते हैं धीरे जैसे जाते हैं । पर बिना किसी पूर्व निश्चित समय के जाने वाला सब से बड़ा मरण त्यौहार है बिचमें परती के सपुत बीर देश की रक्षा के लिए सहुप प्राण व्योस्यार करते हैं ।

अप्य त्यौहार मना कर तो सोच अपनी अपनी धरो को मीट पाते हैं पर यह ऐसा घड़मुठ त्यौहार है बिच मनाते के पश्चात् तो देवताओं के संसार में हीना प्रवेश मिसता है ।



— बाह-सस्कार के समय दाहिने से बायें आमाबाद नरेण हरिबखरजी म भी बातकूपण बीम मंत्री यो भपुरादाग माबुट, मुख्य मंत्री मोहनदास मुस्ताफिया मेजर जनरल भयवतीनिहरी महाराजा हरसिंह खादि उपस्थित है ।

जिस मरुभूमि में पानी की बड़ी कमी है वही इस प्रकार का अद्भुत वृक्ष (वीतान सिंह) पैदा हुआ जिसकी शाखाओं ने हिमालय की चोटियों पर घोर आपत्ति के समय छाया की भीर इस प्रकार अपनी मातृ भूमि की कोख को उज्ज्वल किया ।

हमारे देश का बग-बीजम अपरिचित त्यौहारी से सम्बन्धित होता रहता है । ये सभी त्यौहार निश्चित समय पर आते हैं और बने जाते हैं । पर बिना किसी पूर्व निश्चित समय के आने वाला सब से बड़ा मरुस्थ त्यौहार है जिसमें बस्ती के अद्भुत भीर बेस की रक्षा के लिए सहर्ष प्राण त्यागकर करते हैं ।

सम्ब त्यौहार मना कर तो लोग अपने अपने बरों की लौट पाते हैं पर यह ऐसा अद्भुत त्यौहार है जिस मनाते के परभाव का देवताया के सन्तान में सीधा प्रवेश मिलता है ।



दाह-संस्कार के समय बायें से बायें अमाबाद नरेश हरिप्रफुल्लजी
 श्री बालकृष्ण जीस मधी श्री मधुरावाम मासुर, मुख्य मधी
 माहमनात मुगाडिया मंत्र नतरम भगवतीमिहरी महाराजा हरीसि
 यादि उपस्थित हैं।

परमवीर

जिस मरुभूमि में पानी की बड़ी कमी है वहाँ इस प्रकार का मरुभूमि वृक्ष (पीतल सिंह) पैदा हुआ जिसकी शाखाओं ने हिमालय की चोटियों पर जोर धारण के समय जड़ों की धीरे इस प्रकार अपनी मासु मूँड की कोश को उखलाना किया।

हमारे देश का जन-वीरन धर्मगुरु श्री हारो से उन्मत्त होना रहा है। ये सभी त्योहार निश्चित समय पर आते हैं और बने आते हैं। पर बिना किसी पूर्ण निश्चित समय के आने वाला सब से बड़ा मरण त्योहार है जिसमें मरती के सपुत्र और देश की रक्षा के लिए सहाय प्रार्थना स्वीकार करते हैं।

धर्म त्योहार मना कर तो लोग अपने अपने बतों को नोट आते हैं पर यह ऐसा मरुभूमि त्योहार है जिसे मनाने के परचाह तो ईश्वरों के संसार में सीमा प्रवेश विभवा है।

धारा तीरथ में षठ ,
 घसियौ धूं सैतान ।
 उण गिर तीरथ सूं बहो ,
 गग दूणो पुन जाण ।

गिर बहू गगा सरसती ,
 जमना तीरथ थाय ।
 सो सगम सैतान री ,
 कीरत - धम कहाय ।

रण-किलोळ जमना हियै ,
 गग सरग सोपान ।
 सरसत सहारा पवन पिण ।
 बांचै सुजस जिहान ।

परमबीर

हे शैतानसिंह ! जिस स्वान पर तू मुझ
रूपी तीर्थ में प्रविष्ट हुआ था उस पुष्प
हिम तीर्थ से बहने वाली पावन-मंथा का
पुष्प अब त्रिगुणित हो गया है ।

उसी पुष्प विरि राज से बहने वाली गंगा
सरस्वती धीरे यमुना जिस सधम-स्वत
पर मिलती है वह स्वत शैतानसिंह का
कीर्ति-स्तम्भ है ।

धमी तक यमुना की कल-कल ध्वनि में
पुत्र की भाषाव प्रतिध्वनित हो रही है ।
मुक्तिदायिनी मंथा की स्वयिक पावनता
उसमें गुरुधित है धीरे सरस्वती की लहरें
तेरे बभिरान की मधमयी भाषा का रही
हैं ।

धारा तीरथ में जठ ,
 धसियौ थूं सैतान ।
 उण गिर तीरथ सूं बही ,
 गग दूणी पुन जाण ।

गिर वह गगा सरसती ,
 जमना तीरथ पाय ।
 सो सगम सैतान रो ,
 कीरत - धम कहाय ।

रण किसोळ जमना हिय ,
 गग सरग सोपान ।
 सरसत लहरां पवन पिण ।
 वांचे सुअस जिहांन ।

परमबीर

हे शैतानसिंह ! जिस स्थान पर तू मुझ
रूपी तीर्थ में प्रविष्ट हुआ था उस पुष्प
हिम तीर्थ से बहने वाली पावन-महा का
पुष्प घब द्विगुणित हो गया है ।

उसी पुष्प विरिणज से बहने वाली गंगा
सरस्वती और यमुना जिस संगम-स्थल
पर मिलती है वह स्वस शैतानसिंह का
कीर्ति-स्तम्भ है ।

धरती तक यमुना की कम-कम ज्वलि में
पुङ्ग की साबाय प्रतिध्वनित हो रही है ।
मुक्तिदायिनी गंगा की स्वर्गिक पावनता
उत्तम सुखदत्त है और सरस्वती की सहारे
तेरे ज्ञानिजान की मधमयी पाया गा रही
है ।

धारा तीरथ में जठे ,
 धसियौ धूं सैतान ।
 उण गिर तीरथ सू बही ,
 गग दूणी पुन जाण ।

गिर बह गगा सरसती ,
 जमना तीरथ थाय ।
 सो सगम सतान री ,
 कीरत - थभ कहाम ।

रण किलोळ जमना हिये ,
 गग सरग सोपान ।
 सरसत सहरी पवन पिण ।
 बांधे सुजस जिहान ।

परमवीर

इन तीनों नदियों का नीर तेरे बसिदान का सम्बोध लेकर समुद्र में समाहित होता रहता है जिससे समुद्र से उत्पन्न चंद्रमा के बंधव (चंद्रबंधी शैतानसिंह) का गौरव मय बसिदान उसके हृदय में सूर्य हिनोरें सेने जगता है ।

जब तक समुद्र में इन नदियों के पानी के घाने के साथ-साथ नहरें चळती रहेंगी तब तक वह सुन्दर रत्नाकर छत्र नर राम की मौरवमयी बापा की भाँटे हुए कभी नहीं बकेपा ।

हे शैतानसिंह ! जब तू भीषित या तो हम बोके से परिचित व्यक्ति ही तुम्हें जानते है । पर तूने देण के सिद्द सकते हुए घसाधारण मृत्यु प्राण्य कर समूच सत्तार में अद्वितीय नाम कमाया है ।



कामा में बाह-संस्कार के समय परमबीर के अंतिम दर्शनों के लिये
उपस्थित जनता ।

तीनु नद री नीर बह ,
 निस ही सागर जाय ।
 सागर सुत रै वस रौ ,
 हेस हियै लहराय ।

जद लग सागर लहरसी ,
 नदिया नीर प्रमाण ।
 रतनाकर रळियावणौ ,
 पकै न करत वस्राण ।

जीवमुड़ा म्हे जाणता ,
 बिरळा धारौ नाम ।
 पण पा बिरळी मोतही ,
 कीधी बिरळी नाम ।

परमवीर

स्फटिक धूल वर्षण में मुक्त देखने के बाद पूर्व में उगने वाला चंद्रमा आकाश में ऊंचा बढ़ता ही जाता है फिर मना चंद्रवर्षी धीतानसिंह धसी वर्षण में मुक्त देखने के परभाव अपने हृद संकल्प की कंस त्याग सकता है ।

चंद्रमा तो आकाश के मध्य में पहुँचने के बाद फिर अस्ताचल की घोर डलने लगता है परन्तु तू तो कीर्ति के आकाश के मध्य में ही रहो ही पलों में धरा के लिये रोमा रोता रहेगा ।

तैने काश्मीर-वासिनी सरस्वती को प्रसन्न करने के लिये उसके बाह्य हँसों को अपने मध के मोती बिये । उसकी बीणा को अपनी आत्मा में बसी हैस प्रेम की भंडार से भंडित किया और मानसरोवर के जल कमलों पर अपने रक्त का झाल रग बढ़ा कर उन्हें और भी गहरे मजीठ रंग का बना दिया ।

हिम दरपण मुख देखिया ,
 चद चढ़े असमान ।
 तिण दरपण मुख देखिया ,
 हटे न हठ सैतान ।

चदो चढ़ नीचो उठ ,
 (यू) नित ऊँचो असमान ।
 कीरत हदे गयण मे ,
 दूहु पक्ष एक समान ।

हसां दे मोती सुयस ,
 भातम तार मकार ।
 फयळ मजीठा रें किया ,
 कसमीरी उपहार ।

परमधोर

यह जान कर तो परमधु बुन्द होता है कि
तू सदा के लिये इस ससार से बिदा हो
गया पर बुधरे ही साथ बीरता और परम
साहस के साथ बूमने की बात जब सामने
आती है तो मन गबिठ हो उठता है । इस
प्रकार की भाव-भूमि में है शैतानसिंह ।
हृदय की धाँकों की पलकों से ठरे बेहरे
की झलक कभी दूर नहीं होती ।

हे शैतानसिंह ! सभी सुखनों में भेष्ट
और भूरवीरों का तू सिरमौर था ।
दुश्मनों के लिये तू वास्तव में शैतान था
पर अपने स्नेहियों का बहुत बड़ा
सहाय था ।

सरस ब्यक्तित्व सरल स्वभाव और सरस
जीवन । वास्तव में तू सरमता की साक्षात्
प्रतिमूर्ति था । पर युद्ध में हे एण-बाङ्कुरे,
तेरे दुश्मनों के रक्त से महान हिम क्षेत्र
को प्राप्ताबिठ कर दिया ।

मरियो लख दुख ऊपजै ,
 जूझ्यो सुण सुनमान ।
 उर भास्या री पलक सूँ ,
 मिटै न मळक सैतान ।

सजना सिरै सैतान सी ,
 पू सूरा सिर मोठ ।
 मरिया हित सैतान ही ,
 सैना मोटी ठोड ।

सादी मन सादी ससा ,
 सादी पारो बेस ।
 पण बाका रणवीर बें ,
 खलतळियो हिम - देस ।

परमवीर

इस पवित्र धरती और धर्म के लिये
धनेकों मोटा सड़े है और मरिच्य में भी
लड़ेंगे पर मानसरोवर के किनारे ऐसे
दुर्मम-स्वप्न में पहुँच कर तो तुम्हारी तरह
दिरले ही रक्त बहावेंगे ।

मून बहसने पर समय के साथ वृक्षों में
और सनकी जीवन-मान्यताओं में भी
संठर जाता है पर मानसरोवर के हृद्य तो
धपनी विशेषताएँ कभी नहीं छोड़ते । प्रथ
तुम्हारे जैसे सत्-पुरुषों में धपनी मून
विरोधताएँ बनी रहती हैं ।

किसी को कितना ही शीमती हीरा क्यों
न मिले उचित धाम पर वह जोहरी क
हाथों केच दिया जाता है परन्तु तू तो
महेश्वर का धमूस्य हीरा है जिसे भारत
माता के मुकुट में स्थान मिला है ।

सड़िया भर लड्डी घणा ,
 घरा घरम र काज ।
 बिरळा रगत बहावसी ,
 पाबासर री पाज ।

जुग पळटणां पळटें पुरक्ष ,
 पळटें जीवण काण ।
 पण पाबासर हससा ,
 तजे न भपणी बाण ।

हीरो जे हायां लगे ,
 जोहरी हाय बिकाय ।
 तू हीरो मुरघर तणी ,
 भारत मुक्त सुहाय ।

परमवीर

घात्र रखा प्रताप राठौड़ पृथ्वीराज
वीरमदे सोनिमरा सिबाजी घोर हुम्मीर
बोहान की स्वर्णमि धारमामें भी वह देख
कर वीरव का अनुभव कर रही है कि इस
युग में भी राठौड़ दुर्गाबास की भूमि में
सैतानसिंह जैसे वीर पदा होते हैं ।

उत्तर दिशा की घोर से भाऊ की रखा
करने वाले तेरे पूर्वजा का दुर्ग वैसलमेर
घात्र मन ही मन गर्वित हो रहा है क्योंकि
तैने चीनियों से निकड़ कर कैलाश पर्वत की
रखा की घोर इस प्रकार अपने पूर्वजों
की परम्परा का निर्वाह किया ।

महाकवि ईशरबास घोर दुरसा घाड़ा
जैसे स्वर्णमि कवि घात्र तेरी कौटि का
बर्णन करने के लिये धातुर हो उठे हैं ।
तुकमीचंद लिङ्गिया घोर सूरजमल मिथरा
जैसे महाकवि तो पुनः इस बरवी पर
अवतरित होने के दम्भुक हो उठे हैं क्योंकि
तुमने अपने बलिदान से राजस्थान की
वीरव-नाबाओं को नया जीवन दिया है ।

घिन दुरगै रे देसड़ ,
 इण जुग इसठो योर ।
 पावल पोवल प्रजसै ,
 वीरम शिवा हमीर ।

प्रजसै गढ़ जैसाण री ,
 उत्तर भठ कीवाड ।
 तो मिडिया दळ घीण रा ,
 सक्या न सिव-गढ़ पाड़ ।

ईसर दुरसो भासता ,
 कयण विहारी क्रीत ।
 हुकमौ सूरजमल करै ,
 घर सुं पाछी प्रीत ।

परमबीर

घाब भारत भूमि और उसके निवासी
तुम्हारे जैसे सपूतों पर गर्व कर रहे हैं ।
इतना ही नहीं घटीत का इतिहास अपने
का फिर गौरवाम्बित अनुभव करता है ।
तुम्हारे इस बलिदान की माया का मायी
पीढ़ियाँ भी हर ऊँचा की मायी के साथ
स्मरण कर यचित होंगी ।

समय का एक जिस प्रकार चलता रहा
है चलता रहेगा और समय नुबरता
रहेगा जब तक यह बरती रहेगी इस पर
कई बर बनेगे और बिगड़ेगे पर इस
संसार में सन सोपों का नाम कभी नहीं
मुसावा बावेना बिन्दुने देश के लिये
प्रसाधारण कार्य किये हैं ।

जो बरती हमारी बन्म भूमि है और
जिसके धाम व जल है हम वाले-मोदे गय
हैं, उसकी रक्षा के लिये अंतिम स्वाँच
तक जो बीर संघर्ष करते हैं उन्हें बन्म है !

परमबीर

अजसै घर म्हे अंजसां
 अजसै सह इतिहास ।
 अजससी सह पीढ़ियां ,
 प्राची तणे प्रकास ।

दिन बीत्या ज्यू बीतसी ,
 घर अितरै के धाम ।
 भव सोभा भूले नहीं ,
 कीधा नर जे काम ।

जिण घरती में जलम ले ,
 मन अळ पोख्या अंग
 घड ऊभा घर ना दिये
 वां पुरसां न रग

परिशिष्ट

- १ मेजर प्रदानसिंह का अन्तिम पत्र ।
- २ प्रधान मंत्री का लोक सभा में वक्तव्य ।
- ३ सैनिक अधिकारियों के महत्वपूर्ण पत्र ।
- ४ प्रतिरक्षा मंत्री मुख्य मंत्री आदि के वक्तव्य ।

The last letter of Major Shaitan Singh
to his brother in-law

13th Nov 62

My dear Kr Mool Singhji Sahib

How fortunate I am to receive your most affectionate letter only yesterday

I may assure you that I am in best of my health and in wonderfully high spirits.

I am where you think me to be, I may assure you I am really proud and happy to be here. We are all happy and there is no cause of any anxiety

I once again thank you very much for your most affectionate letter and I would again like to assure you that I am most happy and healthy and in wonderfully high Spirits

With kindest regards.

Yours sincerely
SHAITAN SINGH

Prime Minister Mr Nehru's Statement
in Parliament on 20th November 1962



In Ladakh the Chushul airstrip suffered further damage from renewed enemy shelling yesterday. Defence officials could not say whether it was still serviceable.

The story of a field commander's courage and dedication has come to light in a detailed account of the Nov 18 fighting at the Indian post at Rozang la 15 miles south east of Chushul.

Maj Shantan Singh commanding the post was being carried to safety by two jawans after being seriously wounded when the group came under heavy fire.

Maj Singh ordered the jawans to leave him where he was and take cover.

*Extract taken from Hindustan Times
dated 22 11-62*

Seal
DEFENCE SECRETARY

D.O. No. F3/1/63/D (cor)
New Delhi
25th January 1963

Dear Madam

I have great pleasure in communicating to you the award by the President of **Param Vir Chakra** in recognition of the most conspicuous gallantry displayed by Major Shaitan Singh on 18th November 1962 in Ladakh. Please accept the warmest congratulations of the Ministry of Defence on this great distinction conferred on your husband for his immortal valour. I do hope that Major Shaitan Singh, who is now missing and is believed to be a prisoner of War will soon be able to join you and enjoy the distinction conferred on him.

Yours sincerely
Sd P V R BAO

Citation in respect of Major SHAITAN SINGH
(IC-6400) Kumaon Regiment (Posthumous)

Major Shaitan Singh was commanding a Company of an Infantry Battalion deployed at Retangala in the Chushul Sector at a height of about 17 000 feet. The locality was isolated from the main defended Sector and consisted of 5 defended platoon positions. On 18th November 1962, the Chinese forces subjected the Company position to heavy artillery mortar and small arms fire and attacked in over whelming strength and in several successive waves. Against heavy odds, our troops beat back successive waves of enemy attack. During the action Major Shaitan Singh dominated the scene of operations and moved at great personal risk from one platoon post to another sustaining the morale of his hard pressed platoon posts. While doing so he was seriously wounded but continued to encourage and lead his men who following his brave example, fought gallantly and inflicted heavy casualties on the enemy. For every man lost by us, the enemy lost 4 or 5. When Major Shaitan Singh fell disabled by wounds in his arms and abdomen his men tried to evacuate him but came under heavy machine gun fire. Major Shaitan Singh then ordered his men to leave him to his fate in order to save their lives.

Major Shaitan Singh's supreme courage leadership and exemplary devotion to duty inspired his Company to fight gallantly almost to the last man.

Sd. P V R RAO
Secretary to the Government of India

Seal

General J N. CHAUDHURI

D.D No. 70017/13IC/COAS
CHIEF OF THE ARMY STAFF
ARMY HEADQUARTERS
NEW DELHI

14th February 1963

Dear Shrimati,

I write to express the deep sympathy and condolence of myself and all ranks in the Army on the sad and untimely death of your husband, Major Shantan Singh. Your husband fought gallantly and made the supreme sacrifice for the sake of the Motherland—a noble death for any soldier.

I hope you will bear this loss with courage and fortitude with the knowledge that we share your sorrow.

Yours sincerely

Sd. J N CHAUDHURI

Seal
Gen J N CHAUDHURI

D.O No. 31256/4/MS (X)
CHIEF OF THE ARMY STAFF
ARMY HEADQUARTERS
NEW DELHI
31st J n 63

Dear Mrs Sugan Katiwari

It is with great pleasure that I send you my heartiest congratulations on the well merited award of **Param Vir Chakra** conferred on your husband Major Shaitan Singh (IC-6400) Kumaon and express my deep appreciation of the act of valour and most conspicuous bravery performed by him in Ladakh in November 1962

Yours sincerely
Sd J N CHAUDHURY

Lt Gen K. BAHADUR SINGH
Colonel of the KUMAON REGIMENT

D.O 10/Cas/KBS/NDC
THE KUMAON REGIMENT
NEW DELHI
31st Jan. 63

Dear Shrimati Shaitan Singhji,

I was extremely delighted to read in the paper of the rare distinction conferred on your husband Major Shaitan Singhji in recognition of his great qualities of leadership and the most conspicuous bravery shown by him in the service of the nation. Both the Kumaon Regiment as well as the citizen of Rajasthan from where I also come, are immensely proud at this supreme award of gallantry which will always serve as an inspiration to others.

It is a well deserved award and I am personally delighted. May I offer you my heartfelt congratulations on this occasion. I only hope that we will have in the near future a more positive and heartening news of Major Shaitan Singh who is at present reported wounded/believed missing

Yours sincerely
Sd. BAHADUR SINGH

Lt. General BIKRAM SINGH

General Officer Commanding

Headquarters XV Corps,

C/o 56 APO

12th Mar. 63

My dear Shri Surajbhan Singhji,

Thank you very much for your letter dated 20th February 1963. I am very sorry that due to my being constantly away on tour I could not reply to it earlier.

I am very grateful to you for what you have said about me and I much value the sentiments you have expressed.

I am really proud that I had officer like late Maj. Shaitan Singh under my command both here and in Naga Hills. I had the highest regard for him ever since I came in close touch with him and there was no doubt in my mind that he had all the qualities of a perfect gentleman and a brave soldier and that one day he was sure to make a name for himself and his family. Though Major Shaitan Singh is no more in this world but he has made himself immortal by his supreme sacrifice for the cause of our motherland. Needless to say that the future progeny will always remember with reverence people like Major Shaitan Singh who never hesitated to pay the highest price in keeping the hard won freedom of the country. I would like to congratulate you and the family for producing such an outstanding soldier. It is not only

the Army but the whole country is indebted to him
It is not necessary for me to say anything further
There are the words and there are the deeds and by
his action Major Shastan Singh has certainly become
a martyr

I am very keen to come and pay a visit to you all
at Jodhpur I shall certainly do so when I get an
opportunity

With best wishes to you all

Yours sincerely
Sd BIKRAM SINGH

Lt. Col. H. S. DHINGARA
Commanding Officer.

D. O. No. 376/C
13 BATTALION
THE KUMAON REGIMENT
२२ मार्च १९६३

मेजर हीतानसिंह की असाधारण वीरता साहस एवं कुशल नेतृत्वता
पर राज्य सरकार ने जो उनको 'परम वीर चक्र' (मरणोपरान्त)
प्रदान किया है इस उपसल पर मैं भी मेरी पसल के सब ऑफिसर,
वे भी भी वीर जबान आपकी हार्दिक बधाई देते हैं।

उमके इस कार्य ने हमारी पसल की प्रतिष्ठा ही नहीं बढ़ाई, अपितु
पूर्ण सेना तथा देश का गौरव एवं मान भी ऊचा किया है माने
वाली वीरियों के लिए यह एक प्रार्थनापूर्ण उदाहरण रहेगा।

Smt. Sujan Kunwari
Village—Banasar
P.O PHALODHI (Raj)

Sd. एच एस पिगडा

शैतानसिंह सारे देश के प्रतीक

शैतानसिंह राजस्थान के ही नहीं हिन्दुस्तान के प्रतीक हैं। उनका बलिदान सदैव प्रेरणादायक रहेगा। जिसका दिवस मजबूत है वही बंदूक चला सकता है। कमजोर व्यक्ति का हाथ में हथियार नहीं रह सकता और वह कायरता से अपने जाप को ही नुकसान पहुंचा सकता है।

श्रीकृष्णाजी टेंडन

जयपुर, ३१ जनवरी ६३

मदनमोहनराय बलबन्तराय चम्पल

रक्षा-मन्त्री, भारत सरकार

< ×

राजस्थान के शैतानसिंह ने जिस वीरता का प्रदर्शन किया है उसकी गुंठ गाथा प्रत्येक के मुस से सुनने को मिलती है। वे लड़ाई के एक ऐतिहासिक व्यक्ति बन गए हैं। उनके हाथ में गोली लगा जाने के बाद भी वे लड़ते रहे। वे तभी गिरे जब कि उनके पेट में गोली लगी। उनकी वीरता से प्रेरित होकर उनकी टुकड़ी के और जवान भी अपनी जान हथेली पर लेकर लड़े। उनकी टुकड़ी में से कुछ दो तीन व्यक्ति वापिस लौटे, बाकी सब को वीरगति प्राप्त हुई। शैतानसिंह ने पीछे हटने से इनकार कर दिया और इच्छा प्रकट की कि उन्हें रक्त-स्वस में ही वीरगति प्राप्त होने दी जाय। इस गौरवपूर्ण वीरता से राजस्थान का नाम उज्ज्वल हुआ है।

मोहनलाल सुभाषिणी
मुख्य मन्त्री, राजस्थान

जो लोग अब तक मातृ-भूमि की रक्षा के लिए तिर कटारें धाये हैं
 उनको फिर मातृ-भूमि की रक्षा के लिये जागे जाना चाहिये। यही तो
 वह प्रथम पीढ़ी है जब ऐसे बहादुर लोगों के गुहों और विदेशताओं की
 परीक्षा होगी। शैतानसिंह पर किसी गर्व नहीं। मेजर शैतानसिंह ने राज-
 स्थान और राजपुत्र प्राप्ति का नाम वीरता के इतिहास में बहुत ऊँचा
 किया है। मुझे शैतानसिंह जैसी वीरों पर गर्व है।

लेफ्टिनेन्ट जनरल महाराजा लडाईं मारवासिंह,
 जयपुर

× ×

परमवीर शैतानसिंह हमारे लिये प्रेरणा के स्रोत हैं उन्होंने जो कुछ किया
 है उसे वास्ती पीढ़ियाँ उससे सबक लेती रहेंगी।

महाराजा हरिश्चन्द्र
 निर्माण मंत्री राजस्थान सरकार

× ×

मेजर शैतानसिंह ने सहाय के मोर्चे पर अद्वितीय बहादुरी का परिचय
 देकर भारत के सामने एक बहुत बड़ा उदाहरण प्रस्तुत किया है। श्री
 शैतानसिंह की हिम्मत और बहादुरी के कारण ही हम सुकृत शहर व
 वहाँ की हवाई पट्टी को बचाने में कामयाब हुए। मेजर शैतानसिंह का
 नाम भारत के इतिहास में अमर रहेगा।

महाराज लक्ष्मणसिंह इंदरपुर
 प्रथम ही दल के मेजबान राजस्थान विधान सभा, जयपुर

राजस्थान राज्य सरकार मेजर शैतानसिंह के पराक्रम का आदर कन्ती है। युद्ध के निकट हुए युद्ध में आपने जो पराक्रम और वीरता दिखाई उसकी हम सराहना करते हैं। उन्होंने इस प्रकार का वीरता का मार्ग प्रशस्त किया है जिसके लिये राजस्थान प्रसिद्ध है।

मेजर शैतानसिंह के पिता ठाकुर हैमसिंह ने भी जो धन नहीं रहे हैं परन्तु महायुद्ध में असाधारण वीरता दिखाई दी। इसके लिये जोधपुर रियासत व ब्रिटिश सरकार ने उन्हें कई पदक और जो भी धन की पदव दी थी।

मथुराबास मथुरा
गृह मन्त्री राजस्थान

× ×

३८ वर्ष की आयु के मेजर शैतानसिंह ने वीरगति प्राप्त की। अपने शौर्य की गाथाओं से राष्ट्र को प्रेरित किया। उसकी शक्ति को उभार और नौजवानों को प्रेरित किया। परमवीर शैतानसिंह के सम्मान में राजस्थान के शौर्य को प्रतिष्ठित प्रदान की।

निरजननाथ धारवाड़
उप शिक्ष मन्त्री राजस्थान

× ×

जब मैंने शैतानसिंह को एक फुटबॉल के खिलाड़ी के रूप में पहचानने देखा तब उसी दिन अनुमान लगा लिया कि यह एकदम होनहार है। मैंने उससे पूछा कि तुम क्या धधा करना चाहते हो? तो उसने उत्तर दिया कि मैं क्रीडा करना चाहता हूँ। मैंने उससे क्रीडा न बना कर सेना में जाने के लिये कहा और वह मान गया। तब मैंने उसे अपनी युनिट दुर्गा होर्स में एक कैप्टेन के पद पर मती कर लिया। उसी दिन से उसका सैनिक जीवन शुरू हुआ था।

धन तक मैं आपने को उसका सौ.धो समझता था हूँ किन्तु २६ जनवरी से हमारा रिश्ता बदल गया है। अब शैतानसिंह मेरा सौ.धो और मैं उसका

कर्नल मोहनसिंह नाटी जोधपुर

परमवीर